शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जून 2014

शिक्षा और जीवन संबंधी विचार

डॉ.बलवीर सिंह जम्वाल
प्रिंसिपल
बी.के.एम.कॉलेज आफ एजुकेशन
बलाचैर, जिला शहीद भक्तसिंह नगर
पंजाब, भारत

शोध संक्षेप

इस लेख में लेखक ने अपने और अन्य शिक्षा शास्त्रियों के शैक्षिक और जीवन संबंधी विचारों को प्रकट करने का प्रयत्न किया है। इन्हें जानकर युवा अपने शिक्षण को जीवन के साथ जोड़कर चुनौतियों सामना कर सकते हैं। जीवन में शांति ही उन्नति का प्रतीक है, जिस समाज में शाति का वातावरण होता है, वही समाज तरक्की कर सकता है। जीवन को अच्छे ढंग से व्यतीत करने के लिए व समाज से सामंजस्य बनाने के लिए अनुभव का होना बहुत जरूरी होता है। यदि हमारे नवयुवक शिक्षा और जीवन संबंधी विचारों को पढ़ेंगे तो नवयुवकों को अनुभव होगा और जीवन में आने वाली चुनौतियों का सामना बड़ी आसानी से कर सकेंगे।

प्रस्तावना

शिक्षा वास्तव में एक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा मानव की छिपी हुई शक्तियेां को विकसित किया जाता है। उजागर किया जाता है। उससे नये ज्ञान, कुशलताओं, मूल्यों आदि को सिखाया जाता है। इससे व्यक्ति अपने वातावरण पर अधिकार पा सकता है। समाज में अपना सही स्थान पा सके और मानव अपने जीवन का लक्ष्य प्राप्त कर सके। डंयूवी ने लिखा है कि, ''शिक्षा अनुभवों की निरंतर पुनर्रचना के द्वारा जीने की प्रक्रिया है। यह व्यक्ति की उन सभी शक्तियों का विकास है जो उसे अपने पर्यावरण को नियंत्रण करने और उसकी संभावनाओं को पूर्ण करने में उसे समर्थ बनाती है। ननजी ने लिखा है, ''शिक्षा बालक के संपूर्ण व्यक्तित्व का पूर्ण विकास है। जान एडमस ने कहा है कि, ''शिक्षा वह चेतना और सोच-विचार से की गई प्रक्रिया है, जिसमें एक व्यक्ति अन्य व्यक्ति पर इसलिए प्रभाव डालता है ताकि संदेशवहन और ज्ञान के उपयोग द्वारा दूसरे व्यक्ति के विकास को संशोधित किया जा सके।'' पेस्टालाजी के अनुसार - शिक्षा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का प्राकृतिक, सुव्यवस्थित और प्रगतिशील विकास है। रेमांट लिखते हैं, ''शिक्षा एक विकास की प्रक्रिया है जो बालक से युवावस्था तक चलती रहती है। इस प्रक्रिया के द्वारा वह अपने प्राकृतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक विकास को स्वयं धीरे-धीरे प्राप्त करता है। यूनेस्को ने कहा है, ''शिक्षा संगठित और स्थिर प्रकार का ज्ञान प्रदान करती है, जिससे जीवन की सभी क्रियाओं के महत्वपूर्ण ज्ञान, कुशलताओं और कार्य आरंभ करने की क्षमता हो।

स्वामी विवेकानंद ने कहा है, "शिक्षा का अर्थ मानव में पहले से विद्यमान दैविक व्यक्तित्व को उभारना है। उपनिषद कहते हैं, "शिक्षा वह है जो मुक्ति प्रदान करवाये।

वेदों में लिखा है, "शिक्षा का उद्देश्य सत्यं, शिवं और सुंदरम का विकास करना है। हरबर्ट स्पेंसर ने लिखा है, "शिक्षा का उद्देश्य है चरित्र का निर्माण करना। रवींद्र नाथ टेगोर ने लिखा है, "वह शिक्षा ही सर्वोच्च प्रकार की है जो हमें न केवल सूचना और ज्ञान प्रदान करे, बल्कि हममें और संसार के अन्य जीव व प्राणियों के मध्य प्रेम और भाईचारा विकसित करे। सभी विद्वानों ने शिक्षा उसे ही मना है, जिससे हमारा आचरण ठीक होता हो। आचारविहीन शिक्षा का कोई मतलब नहीं है। हमें अपने द्वारा प्राप्त की गयी शिक्षा को निम्नलिखित कसौटियों पर कसना चाहिए। हम स्वयं के जितने अच्छे आलोचक हो सकते हैं, उतना दूसरा नहीं हो सकता। हमें अपनी आलोचना हमारे द्वारा प्राप्त की गयी शिक्षा और हमारे आचरण के सन्दर्भ में करना चाहिए।

इन विचारों के आधार से शिक्षा और जीवन का सह-संबंध इस प्रकार स्थापित किया जा सकता है:

1 जब समस्या की वास्तविक स्थिति को जानने की कोशिश करते हैं तब हम वैज्ञानिक होते हैं

2 एक वृक्ष की तरह हमें भी अच्छे स्थान की तलाश करना चाहिए।

3 यदि हम दूसरे के लिए अपना समय देते हैं, तो हमारा जीवन सही दिशा में है।

4 एक दिन जीवन का अंत होगा, यही जीवन की सच्चाई है।

5 यदि हम दूसरों को सम्मान देते हैं तो उनके दिलों में जगह बनाना आसान होता है।

6 यदि हमारे पास सोचने, कहने और करने में अच्छा संबंध है तो हमारा आत्मविश्वास बढ़ता है।

7 हम अपने और दूसरों के लिए अनुकूल स्थिति पैदा करने का प्रयास करें।

8 समस्या को अपने से बड़ा बनाने के बजाए उसे छोटा बनाएं।

9 दूसरों के लिए कहे गए कटु शब्दों से हमारा जीवन दुःखी हो जाता है।

10 दूसरों से सहयोग का मतलब है समाज में अपने लिए स्थान बनाना।

11 ईश्वर पर भरोसा करने का मतलब है अपने ऊपर भरोसा करना।

12 जब हम दुनिया की भलाई का विचार करते हैं, तो हम आदरणीय नागरिक बन जाते हैं।

13 सदा सच बोलने का साहस व्यक्ति की आंतरिक शक्ति का स्रोत है।

14 महान व्यक्तियों के जीवन और कार्यों की बार-बार चर्चा करना अच्छे शिक्षक का प्रथम लक्षण है।

15 समय का सदुपयोग करने के लिए निरंतर प्रयासरत रहने वाला व्यक्ति जीवन मूल्यों को धारण कर पाता है।

16 आत्मावलोकन करने से शिक्षा का सही उपयोग हो पाता है।

17 अच्छी शिक्षा प्राप्त व्यक्ति ही अपने जीवन में धन-संपत्ति का सही उपयोग कर पाता है।

18 दूसरों से सहमति अथवा असहमति जताने का यही अर्थ है कि हमने शिक्षा के माध्यम से ग्रहण किए गए विचारों को ठीक से आत्मसात किया है।

19 सच्ची शिक्षा कभी अंधविश्वास की पोषक नहीं होती।

20 किसी की मजबूरी का फायदा उठाना अमानवीय कृत्य की श्रेणी में आता है।

जीवन और शिक्षण

जीवन और शिक्षण दोनों अलग-अलग नहीं हो सकते। मनुष्य जब तक जीवित रहता है, उसका शिक्षण होता रहता है। जिस प्रकार मनुष्य जब बीमार होता है, तब उसे बीमारी से भी शिक्षण मिलता है। वह बीमारी के कारणों की पड़ताल करता है और आगे सावधानी रखता है। यदि बीमारी आई और चली गयी तो उसका शिक्षण अधूरा रह गया। जब व्यक्ति प्रतिक्षण सजग रहकर अपने कार्यों का अवलोकन करता है तो एक तरह से वह उसका शिक्षण ही है। प्रकृति की ओर जिज्ञासु होकर देखने से ही मनुष्य ने भौतिक विज्ञान ने इतनी प्रगति की है। जब उसने स्वयं के भीतर झांका तब आध्यात्मिक उंचाई को हासिल किया। वास्तव में बाह्य और आंतरिक संतुलन ही सच्चा शिक्षण है।

निष्कर्ष

आचार्य रामचंद्र शुक्ल का कथन है कि हम भले ही महान व्यक्ति बनने की क्षमता न रखते हों, परंतु हम महान विचार तो रख ही सकते हैं।' दुनिया विचारों का परिणाम है। अपने में सदा सद्विचारों का रोपण करना ही सच्चा शिक्षण है। उससे जीवन का सौंदर्य निखरता है। जब जीवन और शिक्षण को एक मानेंगे तो सच्ची शिक्षा का आरंभ होगा।

संदर्भ

1 नंदा एस.के., फिलासफिकल सोशियोलाजिकल वेसल आफ एजुकेशन, जालंधर

2 मेहता डी.डी., एजुकेशन इन इमरजिंग इण्डियन सोसायटी, लुधियाना

3 भटनागर सुरेश, डिवलपमेंट आफ एजुकेशन इन इण्डिया, मेरठ